ग्रामीणों के जीवन में रोशनी
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अनूठी पहल

संजय आ. लाठकर, भा.पु.से.
महानिरीक्षक, झारखंड सेक्टर

झारखण्ड राज्य के लातेहार जिला में करमडीह गाँव माओवादी प्रभाव एवं क्रिया कलापों का एक सबसे पुराना एवं महत्वपूर्ण गढ़ रहा है। बूढ़ा पहाड़ की तलहटी में स्थित यह गाँव उनके रणनीतिक तैयारी का केन्द्र रहा है जहाँ से उनके लिए रसद की व्यवस्था करने तथा अन्य सहायता उन तक ले जाने के रास्ते बनाये जाते रहे है। चूँकि यह क्षेत्र उस ओर जाने वाले विशेष भू–भाग एवं भौगोलिक रूप से दूरवर्ती क्षेत्रों से घिरा है जिस कारण यहाँ कई बार प्रशासन की पहुँच नहीं हो पाती है। माओवादियों के रणनीतिक रूप से प्रमुख इस केन्द्र पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए 112 बटालियन, के.रि.पु. बल के जवानों को दिनाँक 20 जून 2018 को करमडीह कैम्प में तैनात किया गया।

दिनाँक 17/08/2018 को इस कैम्प में भ्रमण के दौरान मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि इन गाँवो के लोग सूर्यास्त के उपरांत चाँद की रोशनी पर निर्भर है, जबकि के.रि.पु.बल का कैम्प बिजली की रोशनी से जगमगा रहा था। शाम होते ही कैम्प के अंदर चारो ओर बिजली जल चुकी थी। जबकि बाहर चारो ओर दिल दहला देने वाला अंधकार देखकर मन बहुत दुखी हुआ। अधिकारियों की टीम के साथ इस विषय पर विचार विमर्श किया गया कि क्या इन गाँवों के लोगों की जिन्दगी में आशा की किरण और प्रकाश लाने के लिए क्या हम लोगो द्वारा कुछ किया जा सकता है ?

केवल एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए 112 बटालियन, के.रि.पु.बल के कमाण्डेंट श्री देवाशीष विश्वास एवं कम्पनी कमाण्डर श्री अजय कुमार

द्वारा अपनी टीम के साथ मिलकर कैम्प के बाहर बिजली की अस्थाई लाईन बिछा दी गई एवं कैम्प में उपलब्ध जनरेटर से तार जोड़कर एवं एल.ई.डी. बल्ब लगाकर करमडीह तथा खामीखास गाँव के 10 घरो में बिजली उपलब्ध करा दी गई। सबसे दूर घर लगभग 200 मीटर की दूरी पर था। इस प्रयास से 60 ग्रामीणों को बिजली की रोशनी उपलब्ध हुई। दैनिक घरेलू कार्य जो कि सूर्यास्त के पश्चात् बन्द हो जाया करते थे, अब चहल–पहल एवं पठन–पाठन की गतिविधियों के साथ जीवंत हो गये हैं। यह प्रयास विशेष रूप से छोटे बच्चों, महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

इस छोटे से कदम से उनके जीवन में बहुत बड़ी आशा का संचार हुआ है और वे वर्तमान में क्षेत्र में व्याप्त माओवाद की बेड़ियों से मुक्त होने की उम्मीद करने लगे हैं। बड़ी प्रसन्नता तथा उत्साह के साथ ये ग्रामीण अब के.रि.पु.बल तथा सरकार से अत्यधिक बफादारी तथा विश्वास करने लगे है जो कि माओवाद के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। अब जब कभी भी के.रि.पु.बल का कैम्प रोशनी से जगमगाएगा तो ये घर भी जगमगाएंगे। इनके बाहरी वातावरण से कहीं अधिक, अब इनका जीवन जगमगाने लगा है।

प्रथम चरण के इस प्रयास की सफलता से ग्रामीणों में जिस आशा एवं विश्वास का संचार हुआ उससे उत्साहित होकर 112 बटालियन, के.रि.पु.बल कैम्प के पास के इन दोनों गाँवो के कुछ और परिवारों को रोशनी देने के लिए प्रेरित हुई। इस प्रकार दूसरे चरण के प्रयास में उपलब्ध संसाधनों से 43 घरों एवं 220 ग्रामीणों को बिजली उपलब्ध कराई गयी। दूसरे चरण में सी.आर.पी.एफ कैम्प से लगभग 01 किलोमीटर की दूरी तक अवस्थित घर को भी बिजली उपलब्ध कराई गई है। उक्त दोनों चरणों में करमडीह एवं खामीखास गाँव के कुल 53 परिवारों एवं 280 ग्रामीणों के घर बिजली की रोशनी से जगमग करके उनके जीवन में व्याप्त अंधेरे को दूर करते हुए आशा एवं विश्वास जगाने का अनूठा कार्य के.रि.पु.बल द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। इस सराहनीय कार्य की राज्य की जनता, स्थानीय एवं राष्ट्रीय मीडिया में भूरी–भूरी प्रशंसा की जा रही है।